ISSN 0974 1666

सी.सी.आर.यू.एम

न्यूज़लेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद की द्वैमासिक पत्रिका

खंड 35 • अंक 5–6 सितम्बर–दिसम्बर 2015

श्री अजीत मोहन शरण आयुष के नए सचिव

हरियाणा कैडर, 1979 बैच के आई.ए.एस. अफ़सर श्री अजीत मोहन शरण ने 01 सितम्बर को सचिव, आयुर्वेद, योग व प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का पदभार ग्रहण किया। उन्हें विभिन्न प्रशासनिक कार्यकलापों का पैंतीस वर्ष से अधिक का अनुभव है।

यह नई भूमिका श्री शरण की तृतीय केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति है। अक्तूबर 2013 से यह नया पदभार ग्रहण करने तक वह युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय के अधीन खेल विभाग में सचिव के पद पर कार्यरत थे। उनकी प्रथम केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति मार्च 2000 से मई 2003 तक संयुक्त सचिव के पद पर बैंकिग प्रभाग, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त एवं कम्पनी कार्य मंत्रालय में रही।

दूसरी बार केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति पर आने से पूर्व वह नवम्बर 2011 से लगभग दो वर्ष तक ऊर्जा विभाग, हरियाणा सरकार में वित्त आयुक्त एवं मुख्य सचिव के पद पर सुशोभित रहे। इससे पूर्व वह लगभग नौ महीने की छोटी अवधि के दौरान तकनीकी शिक्षा विभाग में वित्त आयुक्त एवं मुख्य सचिव थे। वह सितम्बर 2008 से फरवरी 2011 के बीच वित्त एवं योजना विभाग में वित्त आयुक्त एवं मुख्य सचिव के पद पर कार्यरत रहे। जुलाई 2005 से अगस्त 2008 तक वह पुरातत्व एवं संग्रहालय

श्री अजीत मोहन शरण

विभाग में वित्त आयुक्त एवं मुख्य सचिव; प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय में सदस्य सचिव और उच्च व तकनीकी शिक्षा विभाग, तकनीकी शिक्षा एवं औद्योगिक प्रशिक्षण बोर्ड में वित्त आयुक्त एवं मुख्य सचिव के पद पर आसीन रहे। वह अपनी प्रथम केन्द्रीय प्रतिनियुक्ति के बाद दो वर्ष से अधिक समय तक खेल एवं युवा कार्यक्रम विभाग में आयुक्त एवं सचिव के पद पर सुशोभित रहे।

श्री शरण ने अपना प्रशासनिक कार्य 1981 में भूमि राजस्व प्रबंधन और ज़िला प्रशासन के क्षेत्र में ओ.एस.डी. के रूप में शुरू किया और तत्पश्चात प्रबंध निदेशक, उद्योग; एस.डी.एम. और अतिरिक्त उपायुक्त, भूमि राजस्व प्रबंधन और ज़िला प्रशासन; अतिरिक्त निदेशक, उद्योग विभाग; अतिरिक्त निदेशक, नागरिक आपूर्ति विभाग; उपायुक्त, भूमि राजस्व प्रबंधन और ज़िला प्रशासन; रजिस्ट्रार, मानव संसाधन विकास; निदेशक, उद्योग विभाग; निदेशक, वाणिज्य; निदेशक, खदान एवं खनिज; निदेशक, कृषि विभाग; प्रबंध निदेशक, लघु उद्योग विभाग, हरियाणा वित्त निगम; विशेष सचिव, राजस्व विभाग; प्रशासक, कमान्ड एरिया डेवलपमेन्ट अथॉरिटी और आयुक्त एवं सचिव, नगर एवं ग्राम आयोजन विभाग का दायित्व संभाला।

श्री शरण आई.आई.टी. दिल्ली से बी.टेक. (इलेक्ट्रोनिक्स) के साथ–साथ लुईसियाना यूनिवर्सिटी, अमेरिका से एम.बी.ए. और यूनिवर्सिटी ऑफ वेल्स

(शेष पृष्ठ 5 पर)

एडवान्टेज हैल्थ केयर इन्डिया-2015 में सहभागिता

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) ने भारत से स्वास्थ्य सुरक्षा सेवाओं का निर्यात बढ़ाने के उद्देश्य से 5–7 अक्तूबर को प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित मैडिकल वैल्यु ट्रेवल पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन "एडवान्टेज हैल्थ केयर इन्डिया–2015" में भाग लिया।

सुश्री रीता ए. तेवतिया, वाणिज्य सचिव, भारत सरकार नई दिल्ली में 5–7 अक्तूबर के दौरान आयोजित एडवान्टेज हैल्थ केयर इन्डिया–2015 का दीप जलाकर उद्घाटन करती हुई।

यह कार्यक्रम विदेश मंत्रालय, गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, आयुष मंत्रालय और नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फ़ॉर हॉस्पिटल्स एन्ड हैल्थ केयर प्रोवाइडर्स (एन.ए.बी.एच.) के सहयोग से वाणिज्य विभाग, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, फ़ेडरेशन ऑफ़ इन्डियन चैम्बर्स ऑफ़ कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्री (फ़िक्की) और सर्विसिज़ एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउन्सिल (एस.ई.पी.सी.) द्वारा आयोजित किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए सुश्री रीना ए. तेवतिया, वाणिज्य सचिव, भारत सरकार ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य हैल्थकेयर सैक्टर में क्षमता निर्माण और सहयोग हेतु विश्व के देशों और लोगों तक पहुँचना है। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार, भारत को मुख्य वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा गंतव्य के तौर पर प्रोत्साहित कर रही है। और योग्यता, परम्परा, तकनीक, पर्यटन और व्यापर के अनूठे संगुटीकरण क्षेत्र में भारत से चिकित्सीय सेवा निर्यात को सुप्रवाह बनाने में प्रयत्नशील है।

सम्मेलन में एडवान्टेज इन्डिया – भारतीय स्वास्थ्य रक्षा का अवलोकन एवं अवसर, नवीनीकरण एवं भारतीय स्वास्थ्य रक्षा तथा आयुष और सम्पूर्ण स्वास्थ्य पर तीन पूर्ण सत्र हुए। श्री श्रीपाद नाईक, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार) आयुष ने तृतीय एवं समापन सत्र में मुख्य भाषण दिया। सत्र के परिमार्जक श्री जितेन्द्र शर्मा, संयुक्त सचिव, आयुष और पैनल सदस्य प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. और सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, डॉ. के.एस. धीमन, महानिदेशक, केन्द्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, श्री शरद परधी, उप–कुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, डॉ. राजीव वासुदेवन, सीईओ, आयुर्वेद अस्पताल, बैंगलोर और श्री सन्दीप आहुजा, चेयरमैन, फ़िक्की वैलनेस समिति थे। प्रो. रईस–उर–रहमान ने भारत में यूनानी चिकित्सा की स्थिति और के.यू.चि.अ.प. की गतिविधियों और उपलब्धियों के बारे में सभा को बताया।

कार्यक्रम में चिकित्सीय और एकीकृत स्वास्थ्य रक्षा सैक्टर में कौशलपूर्ण सहभागिता विकसित करने के उद्देश्य से 65 देशों के 500 अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। भारत इस माध्यम से गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य रक्षा सेवाओं के निर्यात को बढ़ाना चाहता है।

परिषद ने मोनोग्राफ़, भेषजकोश, फ़ार्मुलरी, पोस्टर्स और अन्य प्रकाशनों द्वारा अपनी उपलब्धियाँ प्रदर्शित की। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य रक्षा एवं प्रोत्साहन और अपनी अनुसंधानिक गतिविधियों का निःशुल्क साहित्य एवं आपसी वार्तालाप द्वारा प्रचार प्रसार भी किया। ■

हैदराबाद में नवीन चिकित्सालय खण्ड की आधारशिला और नवीन सुविधाओं का उद्घाटन कार्यक्रम

के.यू.चि.अ.सं. हैदराबाद में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शीघ्र

श्री अजीत एम. शरण, सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने 30 सितम्बर को केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) के केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (के.यू.चि.अ.सं.), हैदराबाद में उन्नत जैवचिकित्सीय प्रयोगशाला और अतिथि गृह के उद्घाटन और नवीन चिकित्सालय खण्ड के आधारशिला कार्यक्रम के अवसर पर संस्थान में आयुष मंत्रालय द्वारा यूनानी चिकित्सा के दो संकायों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरु करने की घोषणा की।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि यूनानी चिकित्सा पद्धति स्वास्थ्य सेवा वितरण क्षेत्र में अपार क्षमता रखती है और आयुष मंत्रालय इसके वैज्ञानिक विकास के प्रति गम्भीर है। उन्होंने कहा कि के.यू.चि.अ.प. को मौजूदा विश्व स्वास्थ्य दृश्यलेख को ध्यान में रखते हुए शोध करना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय चिकित्सा पद्धतियाँ काफ़ी लोकप्रिय हो चुकी हैं और इन पद्धतियों में प्रयोग होने वाली औषधियों का गुणवत्ता नियंत्रण और सुरक्षा बनाए रखने के प्रयास किए जा रहे हैं, साथ ही आयुर्वेद, सिद्ध एवं यूनानी औषधियों की गुणवत्ता और मानकों को सुनिश्चित करने हेतु गुड मैन्युफैक्चरिंग प्रैक्टिसिज़ और गुड एग्रीकल्चरल प्रैक्टिसिज़ दिशा निर्देश बनाए गए हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री चरलाकोला लक्ष्मा रेड्डी, माननीय स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मंत्री, तेलंगाना सरकार ने कहा कि के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद यूनानी चिकित्सा का एक प्रतिष्ठित संस्थान है और सफ़ेद दाग़ के उपचार में इसकी विशिष्टता विख्यात है। उन्होंने कहा कि संस्थान को अपने शोध आँकड़ों को प्रचारित

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) 30 सितम्बर को हैदराबाद में आयोजित के.यू.चि.अ.सं. के नवीन चिकित्सालय खण्ड की आधारशिला और उन्नत जैवचिकित्सीय प्रयोगशाला के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए। मंच पर मौजूद हैं श्री चरलाकोला लक्ष्मा रेड्डी, स्वास्थ्य व चिकित्सा मंत्री, तेलंगाना सरकार, श्री अजीत एम. शरण, सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार, प्रो. रईस–उर–रहमान, सलाहकार (यूनानी) आयुष मंत्रालय एवं महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., श्री नवदीप रिनवा, भारतीय प्रशासनिक सेवक और डॉ. मुनव्वर हुसैन काज़मी, उप निदेशक, के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद।

करना चाहिए और यूनानी चिकित्सा अनुसंधान में एक अनूठे संस्थान के रूप में स्वयं को विकसित करना चाहिए।

अपने सम्बोधन में श्री अजीत शरण ने के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना की घोषणा करने के अतिरिक्त यह भी बताया कि यूनानी चिकित्सा पद्धति गैर संक्रामक रोगों, उपापचयी रोगों और दीर्घकालीन रोगों के इलाज में सक्षम है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि परिषद् को चर्म रोगों और दीर्घकालीन रोगों में अपनी गतिविधियाँ बढ़ानी चाहिए और दिल्ली व अन्य स्थानों पर विशेषकर मध्यम वर्ग में विश्वसनीयता बनाने हेतु विशेष शिविर आयोजित करना चाहिए।

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) 30 सितम्बर को के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के अतिथि गृह का उद्घाटन करते हुए। उनके दायें हैं श्री चारलाकोला लक्ष्मा रेड्डी, स्वास्थ्य व चिकित्सा मंत्री, तेलंगाना सरकार और बायें हैं श्री अजीत एम. शरण, सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार।

इससे पूर्व अपने स्वागत व परिचायक सम्बोधन में प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद ने दो लाख से अधिक सफ़ेद दाग़ रोगियों का उपचार कर प्रसिद्धि प्राप्त की है और दस हज़ार रोगियों के शोध आँकड़े तैयार किए हैं। उन्होंने आगे कहा कि संस्थान ने साइनुसाइटिस और दीर्घकालीन यकृत रोगों के उपचार में भी सफ़लता अर्जित की है। अनुसंधानिक गतिविधियों और सुविधाओं के बारे में बोलते हुए उन्होंने बताया कि संस्थान में यूनानी औषध पर फ़ार्माकोकाइनेटिक और फार्माकोडायनामिक अध्ययन भी किए जा रहे हैं। उन्होंने औषधियों के पासपोर्ट डाटा तैयार करने में आ रही कठिनाइयों को दृष्टिगत रखते हुए यूनानी औषधियों के गुणवत्ता नियंत्रण और भेषजकोशीय मानकों के विकास पर बल दिया।

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) 30 सितम्बर को के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद में प्रो. रईस–उर–रहमान, निदेशक, के.यू.चि.अ.प. से यादगार स्वीकार करते हुए।

इस अवसर पर के.यू.चि.अ.प. ने अपने संस्थापक निदेशक हकीम अब्दुर रज़्ज़ाक़ को लाइफटाइम अचीवमेन्ट अवार्ड से मरणोत्तरीय सम्मानित किया जिसे श्री श्रीपाद नाईक के कर कमलों द्वारा उनकी पत्नी हकीम (श्रीमती) उम्मुल फ़ज़ल ने ग्रहण किया। के.यू.चि.अ.प. ने डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप–महानिदेशक को भी परिषद् के विकास हेतु उनके योगदान और उत्सर्ग के लिए प्रशंसनीय पुरस्कार से सम्मानित किया। के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के पूर्व निदेशकों डॉ. एस.जे. हुसैन, डॉ. मुश्ताक़ अहमद और पूर्व उप निदेशक डॉ. एम.ए. वहीद भी

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, आयुष के केंद्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) 30 सितम्बर को के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के नवीन चिकित्सालय खण्ड की आधारशिला रखते हुए।

प्रशंसनीय पुरस्कार से सम्मानित किए गए। श्री नाईक और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद का उन्नत प्रोफ़ाइल सामूहिक रूप से जारी किया।

उद्घाटन सत्र के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद के उपनिदेशक प्रभारी डॉ. मुनव्वर हुसैन काज़मी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

इसके पश्चात् श्री श्रीपाद येस्सो नाईक ने अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में संस्थान के अतिथि गृह और उन्नत जैवचिकित्सीय प्रयोगशाला का उद्घाटन किया और नवीन चिकित्सालय खण्ड की आधारशिला रखी। ■

आई.आई.टी.एफ. में गैर संक्रामक रोगों हेतु जाँच शिविर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) ने 14 से 27 नवम्बर को इन्डिया इन्टरनेशनल ट्रेड फ़ेयर (आई.आई.टी.एफ.) 2015 में ग़ैर संक्रामक रोगों की जाँच हेतु स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित शिविर में भाग लिया।

जाँच शिविर का उद्घाटन श्री जगत प्रकाश नड्डा, केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री द्वारा किया गया। के.यू.चि.अ.प. और आयुष मंत्रालय के अधीन अन्य अनुसंधान परिषदों ने ग़ैर संक्रामक रोगों के लिए आगंतुकों की जाँच कर शिविर में सहभागिता की। के.यू.चि.अ.प. के चिकित्सकों ने 789 रोगियों की चिकित्सीय जाँच की और उन्हें निःशुल्क परामर्श दिया। इन रोगियों में से कुछ रोगी उपचार हेतु परिषद के यूनानी चिकित्सा केन्द्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली और दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल, नई दिल्ली स्थित यूनानी विशेषता क्लीनिक में भेजे गए।

के.यू.चि.अ.प. ने आई.आई.टी. एफ. 2015 में अपने स्टाल से यूनानी चिकित्सा द्वारा स्वास्थ्य लाभ तथा परिषद की गतिविधियों और उपलब्धियों से सम्बंधित साहित्य का वितरण किया और परिषद के मुख्य प्रकाशन प्रदर्शित किए। ■

(पृष्ठ 1 का शेष)

(यू.के.) से डेवलपमेन्ट इकॉनोमिक्स में स्नात्तकोत्तर हैं। वह मातृभाषा हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा में पारंगत हैं।

वह यूनानी चिकित्सा और अन्य परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के बहुमुखी विकास में गहन रूचि रखते हैं। वह ग़ैर संक्रामक और निर्गमित रोगों के उपचार में आयुष पद्धतियों की सामर्थ्यता के उपयोग के सम्बन्ध में गम्भीर हैं और दिलचस्पी रखते हैं।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) श्री शरण का सचिव (आयुष) के पद पर स्वागत करती है और उनके संरक्षण में यूनानी एवं अन्य आयुष चिकित्सा पद्धतियों के चहुंमुखी विकास की आशा व कामना करती है। ■

यूनानी चिकित्सा पर विश्व सम्मेलन

के.यू.चि.अ.प. के शोधकर्ताओं ने 12–13 अक्तूबर को शेर–ए–कश्मीर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, श्रीनगर (जम्मू व कश्मीर) में 'यूनानी मेडिसिन – इमरजिंग ट्रेन्ड्स एन्ड फ़्युचर प्रोस्पेक्टस' पर आयोजित विश्व सम्मेलन में भाग लिया। इस सम्मेलन का आयोजन डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ़ इन्डियन सिस्टम्स ऑफ़ मेडिसिन, जम्मू व कश्मीर द्वारा किया गया था जो आयुष मंत्रालय और वर्ल्ड यूनानी फ़ाउन्डेशन (डब्ल्यू.यू.एफ.) द्वारा प्रायोजित था।

श्रीनगर में 12–13 अक्तूबर को आयोजित यूनानी चिकित्सा पर विश्व सम्मेलन के मंच पर बैठे श्री श्रीपाद नाईक, आयुष के केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., प्रो. एस. शाकिर जमील, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली और अन्य गणमान्य व्यक्ति।

माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (आयुष) श्री श्रीपाद येस्सो नाईक ने 12 अक्तूबर को दो दिवसीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत यूनानी चिकित्सा में विश्व में अग्रणी है और सरकार अन्य भारतीय पद्धतियों के साथ–साथ इस चिकित्सा पद्धति के बहुमुखी विकास हेतु प्रतिबद्ध है। उन्होंने आगे कहा कि यूनानी चिकित्सा, राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजना में हमारे स्वास्थ्य सेवा प्रदान प्रणाली का एक अविभाज्य भाग है। उन्होंने जम्मू व कश्मीर के आयुष विभाग से केन्द्रीय सहायता प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक आयुष परियोजनाओं को तैयार करने की बात कही।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री मुफ़्ती मोहम्मद सईद, माननीय मुख्य मंत्री, जम्मू व कश्मीर ने कहा कि होम्योपैथी और एलोपैथी चिकित्सा पद्धतियां लोगों के रोग निदान के समान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न चिकित्सा सिद्धान्तों पर काम करती हैं और यूनानी चिकित्सा को उसका स्थान दिया जाए ताकि राज्य की सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं में प्रभावकारी रूप से समाकलन हो सके। उन्होंने आगे कहा कि वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियां एक परिवर्तन अवस्था से गुज़र रही हैं और इनमें हो रहे अनुसंधान से, इनकी प्रभावकारिता व क्षमता से सम्बंधित डर व शक को दूर करने में मदद मिलेगी। उन्होंने जम्मू व कश्मीर राज्य को औषधीय पौधों का एक ख़ज़ाना बताते हुए कहा कि जम्मू व कश्मीर विस्तारित वनस्पतीय औषध बाज़ार में महत्त्वपूर्ण रूप से सहयोग कर सकता है। श्री मुफ़्ती सईद ने जम्मू व कश्मीर को अनूठी सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक सुंदरता बताते हुए कहा कि यह राज्य हर्बल टूरिज़्म में एक आदर्श स्थान बन सकता है। उन्होंने सम्पूर्ण राज्य में मुख्य पर्यटन केन्द्रों पर औषध उद्यान और विशेष चिकित्सा केन्द्र स्थापित करने के लिए आयुष विभाग को परामर्श दिया।

उद्घाटन सत्र में श्री चौधरी लाल सिंह, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा मंत्री, जम्मू व कश्मीर सरकार, सुश्री आसिया नक़्श, स्वास्थ्य एवं सामाजिक कल्याण राज्य मंत्री, जम्मू व कश्मीर सरकार, प्रो. रईस–उर–रहमान, सलाहकार (यूनानी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., डॉ. एम.के. भण्डारी, आयुक्त/सचिव, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, डॉ. अब्दुल कबीर डार, महानिदेशक, भारतीय चिकित्सा प्रणाली, डॉ. मोहसिन देहल्वी, अध्यक्ष, वर्ल्ड यूनानी फ़ाउन्डेशन उपस्थित थे।

सम्मेलन में भारत वर्ष और विदेश के विभिन्न विभागों, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों से प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिनिधियों ने भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को बढ़ावा देने पर बल दिया और यह बताया कि ये पद्धतियां उन क्षेत्रों में भी प्रभावशाली हैं जहां आधुनिक चिकित्सा पद्धति कारगर नहीं होती। प्रस्तुतिकरण में भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में उपचार तकनीक की प्रभावकारिता पर प्रकाश डाला गया।

डॉ. खालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप महानिदेशक, श्री शमसुल आरिफ़ीन, अनुसंधान अधिकारी (रसायन), श्री अमीनुद्दीन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति), डॉ. मौ. फ़ज़ील, डॉ. अहमद सईद और डॉ. यूनुस मुन्शी, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) ने के.यू.चि.अ.प. की ओर से कार्यक्रम में भाग लिया। ■

एन.एफ.यू.एम. और यू.पी.आई. के पुनरावलोकन पर बुद्धयोत्तेजक सत्र

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने यूनानी भेषजकोश समिति का सचिवालय होने के नाते 29 अगस्त 2015 को जामिया हमदर्द, नई दिल्ली में नेशनल फार्मूलरी ऑफ यूनानी मेडिसिन (एन.एफ.यू.एम.) और भारतीय यूनानी भेषजकोश (यू.पी.आई.) के पुनरावलोकन पर एक बुद्धयोत्तेजक सत्र का आयोजन किया। इस सत्र में यह निर्णय लिया गया कि सभी भेषजकोशीय प्रलेखों का पुनरावलोकन और अद्यतन होना चाहिए।

प्रो. के.एम.वाई. अमीन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ 29 अगस्त को जामिया हमदर्द, नई दिल्ली में नेशनल फार्मूलरी ऑफ यूनानी मेडिसिन और भारतीय यूनानी भेषजकोश के पुनरावलोकन पर आयोजित बुद्धयोत्तेजक सत्र को संबोधित करते हुए।

प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. व यूनानी भेषजकोश समिति के सदस्य सचिव ने अपने प्रस्तावित भाषण में एन.एफ.यू.एम. और यू.पी.आई. के पुनरावलोकन व अद्यतन की आवश्यकता को उजागर किया। इससे इसकी कमियों को दूर करने और इस क्षेत्र में हुए विकास को सम्मिलित करने का अवसर मिलता है। उन्होंने यूनानी औषधियों के मानकीकरण के पथ–प्रदर्शन में हकीम अजमल खां, जिनके योगदान को हकीम अब्दुल हमीद ने यूनानी और फार्मेसी कॉलेज साथ–साथ स्थापित कर आगे बढ़ाया है, की कोशिशों को भी सराहा।

प्रो. एस. ज़िल्लुर रहमान, इब्ने सिना अकादमी, अलीगढ़ ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यूनानी दवाओं के भेषजकोशीय अध्ययन की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इससे हम यूनानी चिकित्सा के मूल सिद्धान्तों से दूर हो जाते हैं। जबकि प्रो. के.एम.वाई. अमीन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने सुझाव दिया कि एन.एफ.यू.एम. और यू.पी.आई. का पुनरावलोकन व दस्तावेजों का पुनः निरीक्षण यूनानी चिकित्सा ग्रन्थों के अनुसार विशेषज्ञों द्वारा किया जाना चाहिए।

उद्घाटन के पश्चात् सत्र में, प्रो. सैयद शाकिर जमील, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि एन.एफ.यू.एम. एक कानूनी दस्तावेज़ है और ड्रग एवं कॉस्मेटिक एक्ट का भाग है। इसका नियमित अद्यतनीकरण होना चाहिए। डॉ. असद पाशा, हैदराबाद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि औषधियों की पहचान और उनकी तैयारी करने की विधि को वर्तमान मसौदे में सम्मिलित करना चाहिए।

डॉ. जी.एन. क़ाजी, कुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने आग्रह किया कि यूनानी औषध कम्पनियों को आगे आकर भेषजकोश के निर्माण में सहयोग करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि अव्यवों के प्रत्यावर्तन और मिलावट को दृष्टिगत रखते हुए परम्परागत औषधियों की सुरक्षा मूल्यांकन किए जाने की आवश्यकता है।

प्रो. शारिक ज़फर, थाणे ने कच्ची औषधियों के सम्मिश्रण पर नियंत्रण हेतु आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रो. एम.ए. जाफरी, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि वर्गिकी में होने वाले लगातार परिवर्तन के कारण औषधकोश में अद्यतन होना चाहिए। प्रो. वजाहत हुसैन, अलीगढ़, डॉ. मोहसिन, देहल्वी रेमेडीज, नई दिल्ली, डॉ. आसिम अली खाँ, डॉ. विधु ऐरी और डॉ. अख्तर सिद्दीकी, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने एन.एफ.यू.एम. को अद्यतन करने के कुछ बिन्दुओं पर अपने विचार व्यक्त किए।

डा. एम.यू.आर. नायडु, हैदराबाद ने कहा कि औषधियों का विकास मरीज़

जामिया हमदर्द, नई दिल्ली में 29 अगस्त को के.यू.चि.अ.प. द्वारा नेशनल फार्मूलरी ऑफ यूनानी मेडिसन और भारतीय यूनानी भेषजकोश के पुनरावलोकन पर आयोजित बुद्धयोत्तेजक सत्र के सहभागियों का एक दृश्य।

की आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। डॉ. फरहान जलीस, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि यूनानी मिश्रणों को सरल बनाया जाना चाहिए। डॉ. सईद अहमद, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने कहा कि दवाओं के विषाक्तता डेटा के साथ–साथ उनके औषधीय कार्यों का भी उल्लेख किया जाना चाहिए। डॉ. एम.ए. वहीद, हैदराबाद ने कहा कि सुरक्षा मूल्यांकन हेतु नई तकनीक को अपनाना चाहिए। डॉ. शाहिद अंसारी, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने भी सुरक्षित मापदण्डों के विकास पर बल दिया। डॉ. गुफरान अहमद, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने कहा कि पुनरावलोकन में मूल संदर्भों को दृष्टिगत रखा जाए। प्रो. ताजुद्दीन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ने यूनानी मिश्रणों की पुनः रचना पर बल दिया।

डॉ. खालिद महमूद सिद्दीक़ी, उपमहानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. के सम्बोधन से बुद्धयोत्तेजक सत्र का समापन हुआ। ■

सांस्थानिक नैतिकता समिति की बैठक

परिषद् के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भद्रक में 27 सितम्बर को नैदानिक चिकित्सीय परियोजना ज़ोफ–ए–दिमाग़ के नैतिक अनुमोदन हेतु सांस्थानिक नैतिकता समिति की 7वीं बैठक का आयोजन किया गया।

के.यू.चि.अ.प. के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भद्रक की सांस्थानिक नैतिकता समिति के सदस्य ज़ोफ–ए–दिमाग़ पर नैदानिक शोध परियोजना को नैतिक अनुमति देने पर विचार करते हुए।

डॉ. हकीमुद्दीन खां, अनुसंधान अधिकारी प्रभारी ने अपने स्वागत सम्बोधन में संस्थान में जारी शोध परियोजनाओं की स्थिति से सांस्थानिक नैतिकता समिति को अवगत कराया। समिति की अध्यक्षता डॉ. तृप्ति रेखा स्वाइन, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, एस.सी.बी. मेडिकल कालिज, कटक ने की और समिति ने ज़ोफ–ए–दिमाग़ नैदानिक शोध परियोजना को नैतिक अनुमति प्रदान की। नैतिकता समिति के सदस्यों डॉ. मोहम्मद कमाल खान, चिकित्सा अधिकारी (यूनानी), भद्रक, डॉ. सैयद मोज़म्मिल अली, चिकित्सा अधिकारी (यूनानी), बालासोर, मो. अब्दुल बारी, अध्यक्ष, मुस्लिम जमात, भद्रक, श्री शेख जुल्फ़िकार अली, एडवोकेट, भद्रक, श्री एस.एम. फारुक़, भद्रक और श्री शेख अनवर हुसैन, भद्रक बैठक में शामिल हुए और संस्थान की अनुसंधानिक प्रगति से संतुष्ट हुए। संस्थान के अधिकारी भी बैठक में उपस्थित थे। ■

आयुष की सामर्थ्यता के प्रचार-प्रसार की आवश्यकता पर बल

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने सूचना, शोध एवं अध्ययन संस्था (एस.आई.आर.एस.) के सहयोग से 19 दिसम्बर को नई दिल्ली में "नवप्रवर्तन ज्ञान सेवाओं में सोशल मीडिया के उपयोग पर राष्ट्रीय सम्मेलन" का आयोजन किया। सम्मेलन में यूनानी चिकित्सा और अन्य आयुष पद्धतियों की सामर्थ्यता से सम्बंधित ज्ञान और सूचना के प्रचार–प्रसार के लिए सूचना तकनीक की उपयोगिता पर बल दिया गया।

प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. (बीच में); डॉ. खालिद एम. सिद्दीक़ी, उप महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. (दायें से दूसरे); डॉ. ए.एम. सिद्दीक़ी, निदेशक, सूचना, शोध एवं अध्ययन संस्था (बायें से दूसरे); श्री अज़हर खाँ, सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, के.यू.चि.अ.प. और सूचना, शोध एवं अध्ययन संस्था के श्री आनंद झा के.यू.चि.अ.प. द्वारा 19 दिसम्बर को नई दिल्ली में नवप्रवर्तन ज्ञान सेवाओं में सोशल मीडिया के उपयोग पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन की स्मारिका का विमोचन करते हुए।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि शोध परिणामों और ज्ञान के प्रसार व संरक्षण हेतु पुस्तकालय की आधारभूत संरचना और सुविधाओं को समृद्ध करना अति आवश्यक होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की हाल में हुई एक बैठक के अपने अनुभवों की रोशनी में उन्होंने बताया कि आयुष पद्धतियों में गैर संक्रामक रोगों के प्रति बहुत अधिक प्रभावकारिता मौजूद है, परन्तु वैश्विक विज्ञानीय समाज इससे अनभिज्ञ है। उन्होंने सूचना व ज्ञान के प्रसार के लिए सोशल मीडिया और सूचना तकनीक की उपयोगिता के महत्त्व पर बल दिया।

अन्य गणमान्य व्यक्तियों सहित प्रो. रईस–उर–रहमान ने सम्मेलन के तकनीकी सत्रों में प्रस्तुत किए गए 37 शोध पत्रों की स्मारिका का विमोचन भी किया।

इससे पूर्व डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि पुस्तकालय एवं सूचना व्यवसायी अनुसंधानिक गतिविधियों के क्रियान्वयन और ज्ञान संसाधनों व शोधकर्त्ताओं के मल्य रिक्तता को भरने में मुख्य भूमिका निभाते हैं। उन्होंने हाल ही में परिषद् के पुस्तकालय स्टाफ़ द्वारा शुरू की गई ई–मेल द्वारा 'डेली मैडिकल न्यूज़ एलर्ट' सेवा की सराहना की।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. ए.एम. सिद्दीक़ी, निदेशक, एस.आई.आर.एस. ने कहा कि सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस बात पर विचार–विमर्श करना है कि किस प्रकार सोशल मीडिया द्वारा पुस्तकालय कार्यों को बेहतर बनाया जा सकता है। एस.आई.आर.एस. के श्री आनन्द झा ने सत्र को सम्बोधित किया और सम्मेलन व अपने संस्थान के उद्देश्यों को विस्तारपूर्वक वर्णित किया।

तीन तकनीकी सत्रों में शोधकर्त्ताओं, शिक्षा विदों, पुस्तकालयाध्यक्षों, सूचना व्यवसायी और छात्रों द्वारा पुस्तकालय सेवाओं पर सोशल मीडिया का प्रभाव, प्रयोक्ता, प्रत्याशा, पुस्तकालय सेवाओं की वृद्धि में डिजीटल मार्केटिंग का

के.यू.चि.अ.प. द्वारा 19 दिसम्बर को नई दिल्ली में आयोजित नवप्रवर्तन ज्ञान सेवाओं में सोशल मीडिया के उपयोग पर राष्ट्रीय सम्मेलन के श्रोतागण का एक दृश्य।

प्रभाव और अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों पर कुल 37 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

के.यू.चि.अ.प. के पुस्तकालय एवं सूचना सहायक श्री सैयद शुएब अहमद ने एक सर्वेक्षण आधारित शोध पत्र ''यूनानी मैडिकल कॉलिज पुस्तकालयों में ज्ञान आधारित सेवाएं'' विषय पर प्रस्तुत किया।

सम्मेलन में के.यू.चि.अ.प. के शोधकर्त्ताओं व पुस्तकालय स्टाफ के अतिरिक्त प्रो. उमा कॉजीलाल, डा. इन्द्रा कौल, डॉ. एन.के. बार, प्रो. नौशाद अली और 100 से अधिक प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

श्री अज़हर ख़ान, सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, के.यू.चि.अ.प. ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों व अन्य लोगों का आभार व्यक्त किया। ■

इलाज बित-तदबीर में अनुसंधानिक विधि-तंत्र पर संगोष्ठी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 10 से 11 अक्तूबर 2015 को राज्य तकमीलुत तिब्ब कॉलिज, लखनऊ द्वारा आयोजित इलाज बित तदबीर में अनुसंधानिक विधि–तंत्र पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

अपने उद्घाटन सम्बोधन में प्रो. सिकन्दर हयात सिद्दीक़ी, प्रधानाचार्य, राज्य तकमीलुत तिब्ब कॉलिज, लखनऊ और निदेशक, राज्य आयुष सेवाएं, उत्तर प्रदेश ने इलाज बित तदबीर की प्रभावकारिता पर प्रकाश डाला और स्वास्थ्य प्रोत्साहन व उपचार विशेषकर ग़ैर सक्रामक रोगों के उपचार में इन विधियों के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री अनूप चन्द्र पांडेय, मुख्य सचिव, आयुष सेवाएं, उत्तर प्रदेश ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आयुष क्षेत्र में चुनौतीपूर्ण और नए रोगों जैसे डेंगु, चिकुनगुनिया और स्वाईन फ्लू में शोध करने और परिवर्तक व रेजीमेनल चिकित्सा को अपनाने पर बल दिया।

प्रो. ख़ान मसूद अहमद, उपकुलपति, ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय, लखनऊ ने कहा कि परिवर्तक चिकित्सा मुख्यतः यूनानी, आयुर्वेद और होम्योपैथी में रोग निवारण क्षमता अधिक है। अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा कि ये चिकित्सा पद्धतियाँ निराश लोगों के लिए एक आशा हैं।

हकीम सैयद मौहम्मद शरफुद्दीन क़ादरी, जिन्होंने भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री राजेन्द्र प्रसाद का 1942–43 में गया में दमा रोग का उपचार किया था, ने भी उद्घाटन सत्र को सम्बोधित किया। उन्होंने प्रतिभागियों से यूनानी चिकित्सा के मूलभूत सिद्धान्तों पर दृढ़ता से अमल करने का आह्वान किया और इस पद्धति में मौजूद प्रभावकारी और मितव्ययी उपचार द्वारा ग़रीबों की सहायता करने और स्वार्थी न होने की सलाह दी।

यूनानी चिकित्सा में किए गए योगदान को देखते हुए परिषद के हकीम वसीम अहमद ख़ान व अन्य आठ व्यक्तियों को तिब्बिया कॉलिज द्वारा सम्मानित किया गया।

दो दिवसीय संगोष्ठी में लगभग 200 प्रतिभागी सम्मिलित हुए और के.यू.चि.अ.प. के सात अधिकारियों सहित 110 शोधकर्त्ताओं ने अपने शोध पत्र तथा पोस्टर प्रस्तुत किए। ■

कोंझर वन खंड, उड़ीसा में प्रजाति - वनस्पतीय सर्वेक्षण

परिषद् के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भद्रक, उड़ीसा में कार्यरत शोधकर्ताओं ने उड़ीसा राज्य के कोंझर वन खंड में प्रजाति – वनस्पतीय सर्वेक्षण किया। इसका उद्देश्य क्षेत्र की वनस्पति संरचना का अवलोकन और विभिन्न वन श्रृंखलाओं से औषधीय पौधों को एकत्र करना था। इसके अतिरिक्त स्थानीय निवासियों से पौधों के लोक दावों को इकट्ठा करना भी इसका उद्देश्य था।

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, भद्रक में कार्यरत शोधकर्त्ता औषधीय पौधों के बारे में लोक दावों की जानकारी प्राप्त करने हेतु स्थानीय लोगों से बातचीत करते हुए।

उड़ीसा का कोंझर जनपद 8240 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला हुआ है और यह 21°1′ उत्तरी और 22°10′ उत्तरी अक्षांतर और 85°11′ पूर्व से 86°22′ पूर्वी देशांतर के मध्य फैला हुआ है। जनपद दो असमान भूभाग ऊपरी व निचले कोंझर के बीच विभाजित है। निचला कोंझर भूभाग घाटी है व ऊपरी कोंझर में उत्तर में दक्षिण की ओर फैले पहाड़ मौजूद हैं। जनपद का मौसम अधिक नमीयुक्त भीषण गर्मी वाला व मई महीने में यहाँ का अधिकतम तापमान 38.2°C और दिसंबर में निम्नतम तापमान 11.7°C होता है जो कभी 7°C तक गिर जाता है। औसत वार्षिक वर्ष वृष्टि लगभग 1534.5 मिमी. तक है।

जिले का लगभग आधा भाग जो कि 4043 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है ट्रोपिकल मोइस्ट डेसिडूअस प्रकार के वनों से घिरा हुआ है। जिले के आरक्षित वनों में अधिकतर तीव्र ढ़लान वाली पहाड़ियां तथा संकरी एवं घुमाव्दार घाटियाँ हैं। इन जंगलों में विविध प्रकार के औषधीय पौधे पाए जाते हैं।

वनस्पति सर्वेक्षण के फलस्वरूप 179 पौधों की जाति के 524 नमूने एकत्र किये गए। इनमें वे पौधे भी सम्मिलित हैं जो यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रयोग किये जाते हैं। इनमें से कुछ मुख्य पौधे हैं – उश्बा–ए–हिंदी (*हेमिडेस्मस इंडिकस* (एल.) आर.बी.आर.), तेंदू (*डायोस्पाइरस मेलेनोज़ाइलोंन* राक्स्ब.), करंज (*पोंगेमिया पिन्नाटा* (एल.) पीयर), अंकुमाह (*एकिरेन्थस एस्पेरा* एल.), एनाबुस्सालब (*सोलेनम नाइग्रम* एल.), चौलाई खारदार (*अमारेन्थस स्पाई नोसस* एल.), बेलगिरी (*ईगल मारमेलास* कोर.) कटाई खुर्द (*सोलेनम सर्राटेन्स* बर्म एफ.), कसूस (*कस्कुटा रेफ्लेक्सा* राक्सब), सरवाली (*सिलेसिया अर्जेन्टिया* एल.), संभालू (*वाइटेक्स निगुण्डो* एल.), गुले चकन (*मधुका इंडिका* जे.एफ. मेल), ब्रह्म्मी (*सेन्टेला एशिएटिका* (एल.) अरबन.), सतावर (*एसपेरेगस रेसिमोसस* विल्ड.) ज़ख्मे हयात/पत्थर फोड़ी (*ब्रायोफाईलम केलिसिनम* सेलिसब), अडूसा (*जस्टीसिया अधाटोडा* एल.), नीम (*एज़ेदरकता इंडिका* ए. जस.), इन्दरजौ तल्ख़ (*होलोरिना प्युबिसेन्स* (बुक.हाम.), वाल एक्स.जी.डान.), चम्पा (*माइकेलिया चम्पाका* एल.), गुले अब्बास (*माइरेबिलिस जालापा* एल.), मौलसरी (*मिमोसोप्स एलेन्जी* एल.), अमलतास (*केसिया फिस्चुला* एल.), आमला (*फ़ाइलेन्थस एम्बलिका* एल.), नागकेसर (*मैसुआ फैरा* एल.), असरौल (*राउवोलफिया सरपेनटिना* (एल.) बेन्थ. एक्स कुर्ज़), कौंच (*म्युकुना प्रुरिटा* हुक.),

असरोल (*राउवोलफिया सरपेनटिना* (एल.) बेन्थ एक्स कुर्ज़)

इन्दरजौ तल्ख (*होलेरिना प्युबिसेन्स* (बुक. हाम.) वाल एक्स जी.डान.)

कसूस (*कस्कुटा रेफ्लेक्सा* राक्सव)

कमेला (*मैलोटस फिलीपेनसिस* (लाम) म्युल–आग.), सत्यानासी (*आर्जीमोन मैक्सिकाना* एल.), धतूरा सियाह (*दतूरा फेसिच्योज़ा* एल.), हार सिंगार (*निकटेन्थस आरबोरट्रिसटिस* एल.), घुंगची (*एब्रस प्रिकेटोरियस* एल.), संदल सुर्ख (*टैरोकार्पस सेंटेलीनस* एल.), संदल सफ़ेद (*सेन्टेलम एल्बम* एल.), सिरस (*एल्बिज़िया लेब्बेक* (एल.) बेन्थ.), खारे मुर्गिलान (*एकेसिया निलोटिका* (एल.) डैल.), तलमखाना (*हाइग्रोफिला आरिकुलेटा* (शम.) हींन.), सरफोका (*टेफरोज़िया परपुरिया* (एल.) पर्स.), करीपत्ता (*मुराया कोइनगी* (एल.) स्प्रेग.), बलादुर (*सेमिकार्पस एनाकार्डियम* एल.एफ.), जामुन (*साइज़ीजियम क्युमिनी* (एल.) स्किल्स), अन्कुल (*एलेनिज्यम साल्विफोलियम* (एल.एफ.) वेंग), बेर (*ज़िज़िफस मारिशियाना* लाम्क.) तथा भांगरा (*एकिल्प्टा एल्बा* (एल.) वेंग) आदि।

यह जिला विभिन्न जनजाति समुदायों की मातृभूमि है जैसे कि बाथुड़ी, भुइयां, भूमिज, गोंन्ड, हो, ज्वांग, खरवार, किसान, कोल, कोरा, मुंडा, ओराओ, संताल, साओरा, सबार तथा सोन्तींन। सर्वेक्षण टीम ने यहाँ के पौधों की जातियों के औषधीय गुणों के बारे में यहाँ के पारंपरिक उपचार करने वाले, वृद्ध, ज्ञानी लोगो तथा विभिन्न जनजाति समुदायों से मिलकर तथा उनसे बातचीत करके जानकारी प्राप्त की। इस प्रकार कुल 81 लोक दावे एकत्र किये गए। इनमें से कुछ चिकित्सा उपयोगी जानकारियां इस प्रकार हैं – *पोंगेमिया पिन्नाता* (एल.) पीयर (करंजो) के बीज का तेल सूजन, चर्म रोग तथा जूं मारने के लिए; *एलिफेंतोपस स्केबर* एल. (मयूर चूड़ी) की जड़ तथा *क्रोमोलिना ओडोरेटा* (एल.) किंग एंड रॉबिन्स (पोकोसुंगा) की पत्तियां कटे भाग एवं घाव के लिए; *एकिरेन्थस एस्पेरा* एल. (अपामारंग) की पत्तियां अतिसार, कटे भाग एवं घाव के लिए, *सोलेनम नाइग्रम* एल. (पुतुकुंदी) जोंडिस में, *अमारेंन्थास स्पाइनोसस* एल. (काँटा मारिस) की पत्तियाँ बदहजमी के लिए; *ईगल मारमेलोस* कोर, (बेलपत्रा की पत्तियां) डाईबिटिज़ के लिए; *डेनडाथी फल्केटा* (एल.एफ.) एटिंग (मलांग) की छाल माहवारी चक्र में अनियमिता के लिए; *सोलेनम सर्राटेन्स* बर्म एफ. (अक्रांति) के फल घाव ठीक करने के लिए; *कस्कुता रैफ्लेक्सा* रोक्सब (बन्पोई, निर्मुली) का सम्पूर्ण पौधा जोड़ों के दर्द के लिए तथा तना मूत्र संक्रमण में; *एकेसिया आरिकुलिफोर्मिस* एकम (अकाशी) की पत्तियां सरदर्द तथा पेचिश के लिए; *सिलोसिया अर्जेन्तिया* एल. वेराइटी

अर्जेन्तिया वेट. (लोंगा) खुजली के लिए; *एन्डोग्राफिस पेनिकुलाता* (बर्म एफ.) वाल एक्स नीस (भुइनीम) की पत्तियां माहवारी चक्र में अनियमित्ता के लिए; *क्लोरोज़ाइलोंन स्वीटीनिया* डी सी (भेरू) की पत्तियां बदहज़मी के लिए; *वान्दा रोक्सबरजाई* आर.बी.आर. (मदांग) की पत्तियां बुखार के लिए; वाईटेक्स निगुण्डो एल. (बेगुनिया) के पत्ते सरदर्द और जोड़ों के दर्द के लिए; *मधुका इंडिका* जे.एफ, मैल (महुवा) की छाल अतिसार के लिए; *टर्मिनेलिया तोमेंतोसा* (रक्सब एक्स डी सी) वाईट एंड आर्न (आसन) की छाल मूत्र संक्रमण के लिए तथा पत्तियां सरदर्द के लिए; *मकरंगा पेल्टाटा* (रक्सब) म्युल–आर्ग. (पोहारी) की छाल गुर्दे की पथरी के लिए; तथा *एकिलप्ता एल्बा* (एल.) हस्क की जड़ें कब्ज़ के लिए प्रयोग की जाती हैं।

सर्वेक्षणकर्ताओं ने स्थानीय निवासियों द्वारा विभिन्न उद्देश्यों जैसे खाने, ईधन, चारा, धार्मिक कर्मकांड, श्रृंगार, गृह निर्माण, फर्नीचर और अन्य घरेलू कार्यों हेतु उपयोग की जा रहीं सत्तावन पादप प्रजातियों को रिकार्ड किया। इसके अतिरिक्त, टीम ने संस्थान के म्यूज़ियम में प्रदर्शन हेतु छः नमूने और संस्थान परिसर में पौधारोपण हेतु आठ नमूने एकत्र किए।

सर्वेक्षण टीम का नेतृत्व डा. ऊषा देवी, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति) द्वारा किया गया और टीम के अन्य सदस्यों में श्री हिमांशु दिवेदी, अनुसंधान सहायक (वनस्पति), श्री मौ. तारिक़ अहमद, क्षेत्र परिचारक और श्री अब्दुल लुकमान, ड्राइवर शामिल थे। ■

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), पटना और चेन्नई में क्रमशः 16 सितम्बर और 11 अक्तूबर को ज़रूरतमन्द और अल्प सुविधाप्राप्त लोगों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने और जनता के बीच स्वास्थ्य सुरक्षा और रोगों की रोकथाम के बारे में जानकारी पैदा करने के उद्देश्य से निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पटना के डॉ. मो. वसीम अहमद और डॉ. हशमत इमाम 16 सितम्बर को ख़ानक़ाह मुनेमिया, पटना में मरीज़ों को देखते हुए।

क्षे.यू.चि.अ.सं., पटना द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन ख़ानक़ाह मुनेमिया, मिलन घाट, पटना शहर में किया गया और इसका उद्घाटन डॉ. काज़िम हाशमी, सचिव, जामिया मुनेमिया ने किया। शिविर में सामान्य एवं दीर्घकालीन रोगों से ग्रसित 220 से अधिक लोग लाभान्वित हुए। आगंतुकों को जानकारी देने के उद्देश्य से डॉ. मो. वसीम अहमद और डॉ. हश्मत इमाम द्वारा क्रमशः "सामान्य स्वास्थ्य जानकरी" और "रोकथाम ही निदान है" विषयों पर व्याख्यान दिए गए।

क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई ने थंगल, एरीकरई नगर, वीरुगम्बक्कम में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया और 74 पुरुष, 82 महिलाएं, 04 लड़कों और 13 लड़कियों सहित 173 रोगियों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई गईं।

दोनों शिविरों में यूनानी चिकित्सा द्वारा स्वास्थ्य लाभ के प्रचार प्रसार हेतु स्वास्थ्य साहित्य आगंतुकों में निःशुल्क वितरित किया गया। ■

दीर्घकालीन साइनुसाईटिस पर तकनीकी रिपोर्ट का प्रकाशन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने हाल ही में "दीर्घकालीन साइनुसाइटिस पर बहुऔषधीय यूनानी मिश्रण का नैदानिक परीक्षण" पर एक तकनीकी रिपोर्ट प्रकाशित की। यह प्रकाशन केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में दीर्घकालीन साइनुसाइटिस के 3675 रोगियों पर बहु औषधीय यूनानी मिश्रणों के सुरक्षा एवं गुणवत्ता मूल्यांकन पर किये गए दो नैदानिक अध्ययनों पर आधारित है।

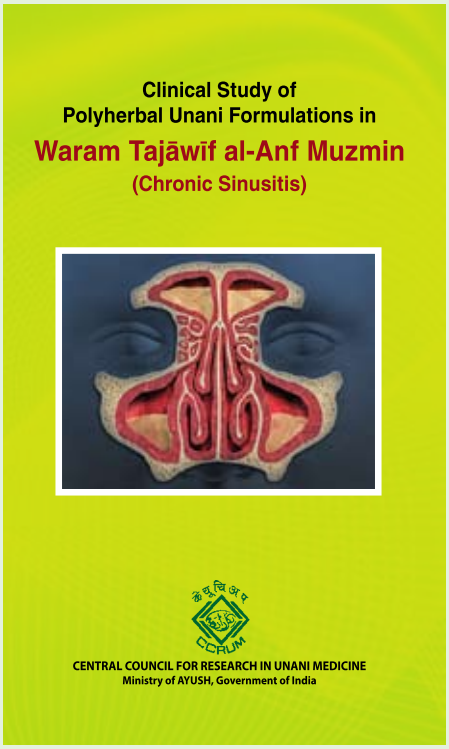

प्रथम अध्ययन में वर्म तजावीफ़–ए–अनफ़ मुज़्मिन (दीर्घकालीन साइनुसाइटिस) के नैदानिक रूप से संपुष्ट 2322 रोगियों को कोडित यूनानी औषधि यूनिम 051 + यूनिम 053 के सम्मिश्रण द्वारा उपचारित किया गया। इनमें से 1841 (79.3 प्रतिशत) रोगियों में सभी नैदानिक लक्षणों में पूर्णतया कमी देखी गयी।

द्वितीय अध्ययन में दीर्घकालीन साइनुसाइटिस के 1353 रोगियों को कोडित यूनानी औषधि यूनिम 052 + यूनिम 053 के सम्मिश्रण द्वारा उपचारित किया गया। उनमें से 963 (71.2 प्रतिशत) रोगियों में सभी लक्षणों में कमी दर्ज की गई।

दोनों अध्ययनों में उपचार से पहले व बाद में पैथोलॉजिकल व बायोकेमिकल मूल्य जांचे गए। उपचार के पश्चात् अंतरीय ल्युकोसाईट गणना में रोगियों की इयोसिनोफिल संख्या में कमी पाई गई। दोनों अध्ययनों में जैव–रासायनिक परिमापों में कोई सार्थक सांख्यिकीय परिवर्तन नहीं देखा गया जिससे यह पता चलता है कि परीक्षित औषधि मिश्रण यकृत–वृक्कीय कार्यों पर कोई दुष्प्रभाव नहीं डालती।

दोनों परीक्षित औषधि मिश्रणों के नैदानिक परिणाम और सुरक्षा मूल्यांकन यह दर्शाते हैं कि ये औषधियाँ सुरक्षित एवं प्रभावी हैं और इन औषधियों के रोगोपचार से सम्बन्धित यूनानी चिकित्सकों के पुरातन यूनानी ग्रन्थों में किये गए दावे सही हैं। ■

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *वर्ष में छः बार प्रकाशित होता है। जनवरी 2014 से यह सिर्फ अंग्रेज़ी की बजाय हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ़्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं।* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *में प्रकाशित सामग्री को* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।*

महानिदेशक व मुख्य संपादकः
प्रो. रईस–उर–रहमान

कार्यकारी संपादकः
मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समितिः
खालिद एम. सिद्दीक़ी
ज़कीउद्दीन
सलीम सिद्दीक़ी
क़मर उद्दीन

संपादकीय कार्यालयः
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
61–65, इंस्टीटयूशनल एरिया, समुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

दूरभाषः +91–11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
फैक्सः +91–11/28522965
ई–मेलः unanimedicine@gmail.com
वेबसाइटः www.ccrum.net

मुद्रणः रैक्मो प्रैस प्रा. लि.
सी–59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1
नई दिल्ली–110020

ISSN 0974 1666

CCRUM newsletter

A Bi-monthly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 35 • Number 5-6 September–December 2015

Shri Ajit M. Sharan is new Secretary (AYUSH)

Shri Ajit Mohan Sharan, a 1979 batch IAS officer of the Haryana cadre, took over as Secretary to the Government of India, Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH) on September 01 (forenoon). He brings with him over three and a half decades of varied administrative experience.

This new role is Shri Sharan's third assignment on Central Deputation. Previously, he served as Secretary in the Department of Sports under the Ministry of Youth Affairs and Sports starting from October 2013, while he first served on Central Deputation during March 2000 to May 2003 when he was Joint Secretary in the Ministry of Finance & Company Affairs, Department of Economic Affairs, Banking Division.

Before coming on Central Deputation for the second time, he served as Financial Commissioner and Principal Secretary in the Department of Power, Government of Haryana for up to two years starting from November 2011. Prior to that, he was Financial Commissioner and Principal Secretary in the Department of Technical Education for a short span of about nine months. Before that, he served as Financial Commissioner and Principal Secretary in the

Shri Ajit Mohan Sharan

Departments of Finance and Planning during September 2008 – February 2011. During July 2005 – August 2008, he served as Financial Commissioner and Principal Secretary in the Department of Archaeology and Museum; Member Secretary, Administrative Reforms and Coordination; and Financial Commissioner and Principal Secretary in the Departments of Higher and Technical Education, Board of Technical Education & Industrial Training. He also served as Commissioner and Secretary in the Department of Sports and Youth Affairs for a period of over two years after his first Central Deputation.

Shri Sharan started his administrative responsibilities as OSD, Land Revenue Management and District Administration in 1981 and later held a number of responsibilities as Managing Director, Industries; SDM and Additional Deputy Commissioner, Land Revenue Management and District Administration; Additional Director, Department of Industries; Additional Director, Department of Civil Supplies; Deputy Commissioner, Land Revenue Management and District Administration; Registrar, Human Resource Development; Director, Department of Industries; Director, Commerce; Director, Mines and Minerals; Director, Department of Agriculture; Managing Director, Department of Small Industries,

(Contd. on page 5)

CCRUM participates in Advantage Health Care India – 2015

The Central Council for Research in Unani Medicine participated in 'Advantage Health Care India – 2015, an international summit on Medical Value Travel held during October 5–7 at Pragati Maidan, New Delhi with the aim to promote healthcare services exports from India.

Ms. Rita A. Teaotia, Commerce Secretary, Government of India lighting the lamp to inaugurate Advantage Healthcare India – 2015 held in New Delhi during October 5–7.

The event was organized by the Department of Commerce, Ministry of Commerce & Industry, Government of India, Federation of Indian Chambers of Commerce & Industry (FICCI) and Services Export Promotion Council (SEPC) and supported by the Ministry of External Affairs, Ministry of Home Affairs, Ministry of Health & Family Welfare, Ministry of AYUSH and National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers (NABH).

Inaugurating the summit, Ms. Rita A. Teaotia, Commerce Secretary, Government of India said that the purpose of the summit was to reach out to people and nations of the world for collaborations and capacity building in healthcare sector. She further said that the Government of India was promoting India as Premier Global Healthcare Destination and to enable streamlined medical services exports from India which was a unique conglomeration of 5T's – Talent, Tradition, Technology, Tourism and Trade.

The summit had three plenary sessions on Advantage India – Opportunities and Overview of Indian Healthcare, Innovations and Indian Healthcare, and AYUSH and Wellness. Shri Shripad Naik, Honb'le Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH delivered keynote address in the third and closing session. The moderator of the session was Mr. Jitendra Sharma, Joint Secretary, AYUSH, while the panelists were Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM and Advisor (Unani), Ministry of AYUSH, Government of India; Dr. K. S. Dhiman, Director General, Central Council for Research in Ayurvedic Sciences; Mr. Sharad Pardhy, Vice Chancellor, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar; Dr. Rajiv Vasudevan, CEO, Ayurvaid Hospitals, Bangalore; and Mr. Sandeep Ahuja, Chairman, FICCI Wellness Committee. Prof. Rais-ur-Rahman informed the gathering about the status of Unani System of Medicine in India, and activities and achievements of the CCRUM.

The event was attended by 500 international delegates from 65 countries with the intention to develop strategic partnership in medical and integrated healthcare sector. India plans to promote export of quality healthcare services through this medium.

The Council showcased its achievements through the display of monographs, pharmacopoeias, formularies, other publications and posters. It also disseminated information on preservation and promotion of health and its research activities through distribution of free literature and one to one talks.

Ceremony for foundation stone laying of new hospital block and inauguration of new facilities

PG courses at CRIUM Hyderabad soon

The Ministry of AYUSH would be starting Postgraduate courses in two disciplines of Unani Medicine at CCRUM's Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Hyderabad, announced Shri Ajit M. Sharan, Secretary to Government of India, Ministry of AYUSH at a ceremony organized for inauguration of upgraded biomedical laboratory and guest house and foundation stone laying of new hospital block at the Institute in Hyderabad on September 30.

Addressing the ceremony, Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (Independent Charge), Ministry of AYUSH, Government of India said that Unani System of Medicine has great potentials for healthcare delivery and the Ministry of AYUSH is serious about its scientific development. He urged that the CCRUM should conduct research keeping in view the current world health scenario. He also stated that Indian Systems of Medicine has gained huge popularity and efforts are being made to maintain the quality control and safety of drugs used in these systems and guidelines for Good Manufacturing Practices (GMP) and Good Agricultural Practices (GAP) have been designed in order to ensure the quality and standards of ASU drugs.

Speaking on the occasion, Shri Charlakola Laxma Reddy, Hon'ble Health and Medical Minister, Telangana State said that the CRIUM, Hyderabad is a well-established Institute of Unani Medicine and a centre of excellence in the management of vitiligo. He urged that the Institute should propagate its research data and develop itself as a model institute of research in Unani Medicine.

In his address, Shri Ajit Sharan, besides announcing the plan to start

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH addressing the ceremony for foundation stone laying of new hospital block and inauguration of upgraded biomedical laboratory and guest house at CRIUM, Hyderabad on September 30. On the dais are Shri Charlakola Laxma Reddy, Health and Medical Minister, Government of Telangana, Shri Ajit M. Sharan, Secretary (AYUSH), Government of India, Prof. Rais-ur-Rahman, Advisor (Unani), Ministry of AYUSH and Director General, CCRUM, Shri Navdeep Rinwa, IAS and Dr. Munawwar Husain Kazmi, Deputy Director In-charge, CRIUM, Hyderabad.

PG courses at CRIUM, Hyderabad, said that Unani System of Medicine has strength in managing non-communicable diseases, metabolic disorders and chronic diseases. He stressed that the Council should increase its activities in skin disorders and chronic diseases and arrange special camps at Delhi and other places to reduce the credibility gap particularly for the middle class.

Earlier in his welcome and introductory address, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM said that the CRIUM, Hyderabad had attained excellence in the management of vitiligo treating more than two lakh patients and generating research data on 10,000 patients. He further said that the Institute had also achieved success in sinusitis and chronic liver diseases. Speaking about the research activities and facilities, he highlighted that pharmacokinetic (PK) and pharmacodynamic (PD) studies of Unani drugs were also being conducted at the Institute. He laid emphasis on the development of pharmacopoeial standards and quality control of Unani drugs expressing the difficulties in the generation of their passport data.

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH inaugurating the guest house of CRIUM, Hyderabad on September 30. On his right is Shri Charlakola Laxma Reddy, Health and Medical Minister, Government of Telangana while on the left is Shri Ajit M. Sharan, Secretary (AYUSH), Government of India.

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH is being presented a memento by Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM at CRIUM Hyderabad on September 30.

On this occasion, the CCRUM honoured its founding Director Hakim Abdur Razzack posthumously with Lifetime Achievement Award which was received by his wife Hakim (Mrs.) Ummul Fazal from Shri Shripad Naik. The CCRUM also conferred Appreciation Award on its Deputy Director General Dr. Khalid M. Siddiqui for his contribution and dedication for the development of the Council. Dr. S.J. Hussain and Dr. Mushtaq Ahmad, Ex-Directors, and Dr. M.A. Waheed, Ex-Deputy Director of CRIUM, Hyderabad were also honoured with Appreciation Awards. Shri Naik and other dignitaries jointly released the

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH laying the foundation stone of new hospital block at CRIUM, Hyderabad on September 30.

newly published Profile of CRIUM, Hyderabad.

The inaugural session concluded with vote of thanks proposed by Dr. Munawwar Husain Kazmi, Deputy Director In-charge, CRIUM, Hyderabad.

Later, Shri Shripad Yesso Naik laid the foundation stone of new hospital block and inaugurated upgraded biomedical laboratory and guest house of the Institute in the presence of Shri Charlakola Laxma Reddy, Shri Ajit M. Sharan and other dignitaries.

NCD screening camp at IITF

The CCRUM participated in the screening camp for non-communicable diseases (NCDs) organized by the Ministry of Health & Family Welfare, Government of India during November 14–27 at India International Trade Fair (IITF) 2015 in New Delhi.

The screening camp was inaugurated by Shri Jagat Prakash Nadda, Hon'ble Union Minister of Health & Family Welfare. The CCRUM and other research councils under the Ministry of AYUSH participated in the camp and conducted screening of the visitors for NCDs. The CCRUM's physicians provided free consultation, medical check-up and counselling to 789 patients. Some of the patients were also referred to the Council's Unani Medical Centre at Dr. Ram Manohar Lohia Hospital and Unani Speciality Clinic at Deen Dayal Upadhyay Hospital, New Delhi for further investigation and treatment.

The CCRUM also displayed its important publications and distributed literature on its research activities and achievements and unique health benefits of Unani Medicine through its stall during the IITF 2015.

(Contd. from page 1)

Haryana Financial Corporation; Special Secretary, Department of Revenue; Administrator, Command Area Development Authority; and Commissioner & Secretary, Town and Country Planning Department.

A Bachelor of Technology in Electronics from IIT Delhi, Shri Sharan holds an MBA degree from Louisiana State University, USA besides a Masters degree in Development Economics from University of Wales, United Kingdom.

He has keen interest in the multidimensional development of AYUSH systems of medicine and is concerned about the utilization and exploitation of their potentials in the management of non-communicable and emerging diseases.

The CCRUM welcomes Shri Sharan as Secretary (AYUSH) and looks forward to all-round development of Unani Medicine as well as other AYUSH systems under his patronage.

Conference on Unani Medicine

The CCRUM participated in the Global Conference on Unani Medicine – Emerging Trends and Future Prospects held at Srinagar (J&K) during October 12–13. It was organized by the Directorate General of Indian Systems of Medicine, J&K and sponsored by the Ministry of AYUSH, Government of India and World Unani Foundation (WUF).

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (I/C) for AYUSH, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM, Prof. S. Shakir Jamil and other dignitaries at Global Conference on Unani Medicine held in Srinagar during October 12–13.

Inaugurating the two-day conference on October 12, Hon'ble Union Minister of State for AYUSH Shri Shripad Yesso Naik said that India is the world leader in Unani Medicine and the government is committed to its all-round development along with other Indian systems of medicine. He further said that Unani Medicine is recognised in the National Health Policy as one of the integral part of our healthcare delivery system. He asked the State AYUSH Department to prepare more AYUSH development projects to get central assistance.

Speaking on the occasion, Shri Mufti Mohammad Sayeed, Honb'le Chief Minister of Jammu and Kashmir said that both homoeopathy and allopathy systems took different trajectories to achieve the same goal of curing people and called for giving space to Unani Medicine so that it could get a level-playing field and integrate effectively into the State's public health services. He further said that the alternative systems of medicine were going through a transitional phase and the research being carried out would help dispel many fears and doubts that had emerged about their efficacy. Describing J&K as a rich repository of medicinal plants, the Chief Minister said that J&K could significantly contribute towards ever-expanding herbal medicinal market. Highlighting J&K's unique cultural heritage and natural beauty, Mufti Sayeed said that the State could position itself as an ideal destination in herbal tourism. He advised the AYUSH Department to set up herbal gardens and specialized therapy units at tourist destinations across the State.

Shri Chaudhary Lal Singh, Minister for Health & Medical Education, Government of J&K; Ms. Asiya Naqash, Minister of State for Health & Social Welfare, Government of J&K; Prof. Rais-ur-Rahman, Advisor (Unani), Ministry of AYUSH, Government of India and Director General, CCRUM; Dr. M. K. Bhandari, Commissioner/Secretary, Health & Medical Education; Dr. Abdul Kabir Dar, Director General, ISM; and Dr. Mohsin Dehlvi, President, World Unani Foundation were also present during the inaugural session.

The conference attracted a large number of delegates from India and abroad. The delegates laid stress upon promoting the Indian Systems of Medicine as they have the potential to address issues for which modern medicine has no solutions. A number of presentations tried to throw light on the efficacy of treatment techniques used in Indian Systems of Medicine.

Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, Shri Shamsul Arfin, Research Officer (Chemistry), Shri Aminudin, Research Officer (Botany), Dr. Mohammad Fazil, Dr. Ahmad Sayeed and Dr. Younis Iftikhar Munshi, all three Research Officer (Unani), participated in the event on behalf of the CCRUM. ■

Brainstorming session on revisiting of NFUM and UPI

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM), being the secretariat of Unani Pharmacopoeia Committee (UPC), organized a brainstorming session on revisiting of National Formulary of Unani Medicine (NFUM) and Unani Pharmacopoeia of India (UPI) on August 29 at Jamia Hamdard, New Delhi. The session resolved that all the pharmacopoeial documents should be revisited and updated.

Prof. K.M.Y. Amin, Aligarh Muslim University, Aligarh addressing the brainstorming session on revisiting of National Formulary of Unani Medicine (NFUM) and Unani Pharmacopoeia of India (UPI) on August 29 at Jamia Hamdard, New Delhi.

In his introductory remarks, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM and Member Secretary of the UPC highlighted the need to revisit and update NFUM and UPI as it provides an opportunity to rectify mistakes and incorporate new developments. He also recalled the efforts of the torch bearer of standardization of Unani drugs Hakim Ajmal Khan whose efforts were carried forward by Hakim Abdul Hameed establishing Unani and pharmacy colleges simultaneously.

Speaking on the occasion, Prof. S. Zillur Rahman, Ibn Sina Academy, Aligarh said that pharmacopoeial studies on Unani drugs were not needed as they would distract them from the fundamentals of Unani Medicine. Whereas, Prof. K.M.Y. Amin, Aligarh Muslim University (AMU), Aligarh suggested that vetting of documents should be as per classical literature involving experts while revisiting NFUM and UPI.

In the post-inaugural sessions, Prof. Syed Shakir Jamil, Jamia Hamdard, New Delhi stated that being a legal document and a part of the Drug and Cosmetic Act NFUM should be updated regularly. Dr. Asad Pasha, Hyderabad said that identification of drugs and method of preparation should be incorporated in the present draft of NFUM.

Dr. G.N. Qazi, Vice Chancellor, Jamia Hamdard, New Delhi urged the Unani drug industry to come forth and get involved in the making of pharmacopoeias. He emphasized the need to conduct safety studies on classical drugs in view of malpractices and alterations in the ingredients. Prof. Sharique Zafar, Thane highlighted the need of initiating measures to curb contamination of raw drugs.

Prof. M.A. Jafri, Jamia Hamdard, New Delhi pointed out that taxonomy undergoes constant change hence pharmacopoeias too need to be updated. Prof. Wazahat Hussain, Aligarh; Dr. Mohsin Dehlvi, Dehlvi Remedies, New Delhi; Dr. Asim Ali Khan, Dr. Vidhu Aeri, and Dr. Akhtar Siddiqui – all from Jamia Hamdard, New Delhi – highlighted some points that needed to be updated in the NFUM.

Dr. M.U.R Naidu, Hyderabad stated that drugs need to be developed according to the need of the patients. Dr. Farhan Jalees, Jamia Hamdard, New Delhi expressed that the formulations must be

A view of participants at the brainstorming session on revisiting of National Formulary of Unani Medicine (NFUM) and Unani Pharmacopoeia of India (UPI) organized by the CCRUM on August 29 at Jamia Hamdard, New Delhi.

simplified. Dr. Sayeed Ahmad, Jamia Hamdard, New Delhi stated that pharmacological actions should be mentioned together with toxicity data. Dr. M.A Waheed, Hyderabad said that new technologies might be adopted to conduct safety studies. Dr. Shahid Ansari, Jamia Hamdard, New Delhi too emphasized the need for developing safety parameters. Dr. Ghufran Ahmad, AMU, Aligarh stated that original references should be consulted while revisiting. Prof. Tajuddin, AMU, Aligarh stressed the need for redesigning of Unani formulations.

The session ended with concluding remarks by Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM. ■

Meeting of Ethics Committee

The Council's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Bhadrak organized 7th meeting of its Institutional Ethics Committee (IEC) on September 27 to obtain ethical approval for a clinical research project on *Zu'f al-Dimāgh* (Cerebro-asthenia).

Members of Institutional Ethics Committee of CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine, Bhadrak discussing research project on Zu'f al-Dimāgh *(Cerebro-asthenia) for its ethical clearance on September 27 in Bhadrak.*

In his welcome address, Dr. Hakimuddin Khan, Research Officer In-charge of the Institute apprised the IEC of the status of ongoing research projects. The IEC chaired by Dr. Trupti Rekha Swain, Associate Professor, SCB Medical College, Cuttack gave ethical clearance to a clinical research project on *Zu'f al-Dimāgh* (Cerebro-asthenia). The members of the IEC Dr. Mohammad Kamal Khan, Medical Officer (Unani), Bhadrak; Dr. Sayed Mozammil Ali, Medical Officer (Unani), Balasore; Alhaj Mohd. Abdul Bari, President, Muslim Jamat, Bhadrak; Mr. Shaikh Zulfiquar Ali, Advocate, Bhadrak; Mr. S.M. Farooque, Bhadrak; and Mr. Shaikh Anwar Hussain, Bhadrak attended the meeting and were satisfied with the research progress of the Institute. The officers of the Institute were also present during the meeting. ■

Need to propagate AYUSH potentials stressed

The Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM), in collaboration with the Society for Information Research and Studies (SIRs), organized a day-long 'National Conference on Application of Social Media in Innovative Knowledge Services' at New Delhi on December 19. The conference laid emphasis on the application of social media and information technology to disseminate the knowledge and information related to the potentials of Unani Medicine and other AYUSH systems.

Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM (centre); Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM (second from right); Dr. A. M. Siddiqui, Director, Society for Information Research and Studies (SIRs) (second from left); Mr. Azhar Khan, Assistant Library and Information Officer, CCRUM and Mr. Anand Jha of SIRs releasing the souvenir of National Conference on Application of Social Media in Innovative Knowledge Services organized by the CCRUM at New Delhi on December 19.

Inaugurating the conference, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM said that the strengthening of library infrastructure and facilities is very essential for preservation and dissemination of knowledge and research findings. In the wake of his recent experience at a WHO meeting, he further said that AYUSH has very great and promising potentials to combat non-communicable diseases, but the global scientific society is very least aware of the fact and advocated the application of social media and information technology to disseminate the knowledge and information.

Prof. Rais-ur-Rahman, along with other dignitaries, also released the souvenir containing 37 research papers that were later presented during the technical sessions of the conference.

Earlier, in his introductory remarks, Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM said that library and information professionals play very important role in enabling research and bridging the gap between knowledge resources and researchers. He appreciated the library staff of the CCRUM for recently starting Daily Medical News Alert service through email.

Speaking on the occasion, Dr. A. M. Siddiqui, Director, SIRs said that the main objective of the conference was to discuss how social media could improve and complement the functioning of libraries. Mr. Anand Jha of SIRs also addressed the session and elaborated the aims and objectives of the conference as well as his organisation.

Later, at the three technical sessions, a total of 37 papers were presented by researchers, academicians, librarians, information professionals and students on impact of social media in library

A view of audience at National Conference on Application of Social Media in Innovative Knowledge Services organized by the CCRUM at New Delhi on December 19.

services, user expectations, digital marketing in enhancing library services and other important aspects. Mr. Syed Shuaib Ahmad, Library & Information Assistant at CCRUM also presented a survey-based research paper entitled *"Knowledge Based Service in Unani Medical College Libraries".*

Those who attended the conference included Prof. Uma Kanjilal, Dr. Indra Kaul, Dr. N.K. Bar and Prof. Naushad Ali. Besides, researchers and library staff of the CCRUM and over 100 delegates participated in the conference.

Mr. Azhar Khan, Assistant Library and Information Officer at CCRUM extended vote of thanks to the dignitaries and participants. ■

Seminar on research methodology in *Ilaj bit Tadbeer*

The Central Council for Research in Unani Medicine participated in the National Seminar on Research Methodology in *Ilaj bit Tadbeer* organized by State Takmil-ut-Tib College (STTC), Lucknow during October 10–11 at Lucknow.

In his inaugural address, Prof. Sikander Hayat Siddiqui, Principal, State Takmil-ut-Tib College and Director, State AYUSH Services, Uttar Pradesh highlighted the potentials of *Ilaj bit Tadbeer* and stressed the need to exploit them in the promotion of health and management of ailments especially non-communicable diseases.

Delivering his presidential address, Shri Anup Chandra Pandey, Principal Secretary, AYUSH Services, Uttar Pradesh laid emphasis on conducting research in AYUSH sector on emerging and challenging diseases like dengue, chikungunya and swine flu and advocated for adopting alternative and regimenal therapies.

Prof. Khan Masood Ahmad, Vice Chancellor, Khwaja Moinuddin Chishti Urdu, Arabi-Farsi University, Lucknow said that the alternative medicines specially Unani, Ayurveda and Homoeopathy have much strength in curing and healing. Citing his personal experience, he said that these medical systems are hope for the hopeless.

Hakim Syed Mohammed Sharfuddin Quadri, famous for treating India's first President Rajendra Prasad in Gaya in 1942-43 for breathlessness, also addressed the inaugural session. He urged the participants to stick to the fundamentals of Unani Medicine and advised to help the poor through effective and economic treatment available in the system and not to become selfish.

Recognizing their contributions for the cause of Unani Medicine, Hakim Wasim Ahmad Azmi, Deputy Director Incharge, Central Research Institute of Unani Medicine, Lucknow and Hakim Sayed Ahmad Khan of CCRUM besides eight others were honoured by the STTC.

During the two-day seminar that was attended by about 200 delegates, 110 researchers including seven officers from CCRUM presented their research papers and posters. ■

Ethno-botanical survey of Keonjhar Forest Division

Researchers of Central Council for Research in Unani Medicine (CCRUM) working at its Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Bhadrak, Odisha recently conducted an ethno-botanical survey of Keonjhar Forest Division of Odisha. It was aimed to observe general vegetation pattern of the area and collect medicinal plants from different forest ranges. It was also aimed to record folk medicinal claims on plants from the local people.

Researchers from CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine, Bhadrak interacting with local inhabitants to record information on folk claims about medicinal plants.

Keonjhar district of Odisha, spread over an area of 8,240 km^2, lies between 21°1′ N and 22°10′ N latitude and 85°11′ E to 86°22′ E longitude. The district is divided into two widely dissimilar tracts; the lower Keonjhar and the upper Keonjhar. The lower Keonjhar tract is valleys of low lands region, while the upper Keonjhar includes mountainous of highlands with a general slope from North to South. The climate of the district is characterized by a repressively hot summer with high humidity. Its maximum temperature is 38.2°C in the month of May and the lowest is 11.7°C in the month of December which even drops down to 7°C. The average annual rainfall is 1534.5 mm.

About half of the area of the district spreading over 4043 km^2 is covered by forests of tropical moist deciduous type. The reserved forests of the district consist mostly of steep hills and narrow winding valleys. The forest area possess good amount of diversity of medicinal plants. The botanical exploration of the study area yielded the collection of 524 plant specimens of 179 plant species. This collection also includes the plant species which are used in Unani System of Medicine. The important ones are: Ushba-e-Hindi (*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.), Tendu (*Diospyros melanoxylon* Roxb.), Karanj (*Pongamia pinnata* (L.) Pierre), Ankumah (*Achyranthes aspera* L.), Anabus-Salab (*Solanum nigrum* L.), Chaulai Khardar (*Amaranthus spinosus* L.), Belgiri (*Aegle marmelos* Corr.), Katai Khurd (*Solanum surattense* Burm.f.), Kasoos (*Cuscuta reflexa* Roxb.), Sarwali (*Celosia argentea* L.), Sanbhalu (*Vitex negundo* L.), Gul-e-Chakan (*Madhuca indica* J. F. Gmel), Brahmi (*Centella asiatica* (L.) Urban), Satawar (*Asparagus racemosus* Willd.), Zakhm-e-Hayat/Pattharphori (*Bryophyllum calycinum* Salisb.), Arusa (*Justicia adhatoda* L.), Neem (*Azadirachta indica* A. Juss.), Kachnal (*Bauhinia purpurea* L.), Champa (*Michelia champaca* L.), Gul-e-Abbas (*Mirabilis jalapa* L.), Maulsari (*Mimusops elengi* L.), Amaltas (*Cassia fistula* L.), Amla (*Phyllanthus emblica* L.), Nagkesar (*Mesua ferrea* L.),

Asrol (*Rauvolfia serpentina* (L.) Benth. *ex* Kurz.)

Inderjo Talkh (*Holarrhena pubescens* (Buch. Ham.) Wall. ex G. Don.)

Kasoos (*Cuscuta reflexa* Roxb.)

Ashok (*Saraca indica* auct. non L.), Gheekuwar (*Aloe barbadensis* Mill.), Panwad (*Cassia tora* L.), Asrol (*Rauvolfia serpentina* (L.) Benth. *ex* Kurz.), Kwanch (*Mucuna prurita* Hook.), Kambil, Kamela (*Mallotus philippensis* (Lam.) Muell.-Arg.), Styanasi (*Argemone mexicana* L.), Dhatura Siyah (*Datura fastuosa* L.), Harsingar (*Nyctanthes arbor-tristis* L.), Ghungchi (*Abrus precatorius* L.), Sandal Surkh (*Pterocarpus santalinus* L.), Mundi (*Sphaeranthus indicus* L.), Sandal Sufaid (*Santalum album* L.), Siras (*Albizzia lebbeck* (L.) Benth.), Khare Murghilon (*Acacia nilotica* (L.) Del.), Talmakhana (*Hygrophilla auriculata* (Schum.) Heyne.), Sarphoka (*Tephrosia purpurea* (L.) Pers.), Karipatta (*Murraya koenigii* (L.) Spreng.), Baladur (*Semecarpus anacardium* L.f.), Jamun (*Syzygium cumini* (L.) Skeels), Ankul (*Alangium salvifolium* (L.f.) Wang), Ber (*Ziziphus mauritiana* Lamk.), and Bhangra (*Eclipta alba* (L.) Hassk.).

The district is the homeland of various tribal communities such as Bathudi, Bhuyan, Bhumij, Gond, Ho, Juang, Kharwar, Kisan, Kolha, Kora, Munda, Oraon, Santal, Saora, Sabar and Sounti. The survey team recorded information on medicinal uses of the plant species by interacting with and interviewing the local traditional healers, elderly knowledgeable people and various tribal communities of the area. A total of 81 folklore claims were recorded. Some of the medicinal uses recorded include: seed oil of *Pongamia pinnata* (L.) Pierre (Karanjo) for rheumatism, skin disease and to kill lice; roots of *Elephantopus scaber* L. (Mayur Chudi) and leaves of *Chromolaena odorata* (L.) King. & Robins. (Poksunga) for cuts/wounds; leaves of *Achyranthes aspera* L. (Apamarang) for diarrhoea and cuts/wounds; leaves of *Solanum nigrum* L. (Putu kundi) for jaundice; leaves of *Amaranthus spinosus* L. (Kanta Mariso) for indigestion; leaves of *Aegle marmelos* Corr. (Bel Ptra) for diabetes; bark of *Dendrophthoe falcata* (L.f.) Etting (Malang) for menstrual cycle problem; fruits of *Solanum surattense* Burm.f. (Akranti) for wound healing; whole plant of *Cuscuta reflexa* Roxb.(Banpoi, Nirmuli) for joint pain and stem for urinary infections; leaves of *Acacia auriculaeformis* A. Cumm. (Akashi)

for headache and dysentery; leaves of *Celosia argentea* L. var. *argentea* Weight. (Longa) for itching; leaves of *Andrographis paniculata* (Burm.f.) Wall. *ex* Nees (Bhuni/Bhuinimo) for menstrual cycle problem; leaves of *Chloroxylon swietiana* DC (Bheru) for indigestion; leaves of *Vanda roxburghii* R. Br. (Madang) for fever; leaves of *Vitex negundo* L. (Begonia) for headache and joint pain; bark of *Madhuca indica* J. F. Gmel (Mahua) for diarrhea; bark of *Terminalia tomentosa* (Roxb. *ex* DC) Wight. & Arn. (Aasan) for urinary infection and leaves for headache; bark of *Macaranga peltata* (Roxb.) Muell. – Arg. (Pohari) for kidney stone; and roots of *Eclipta alba* (L.) Hassk. for constipation.

The surveyors also recorded fifty seven plant species used by local inhabitants for various purposes such as edible, fuel, fodder, ritual, ornamental, house construction, furniture and other household purposes. Besides, the team collected six drug samples for display in the museum of the Institute and eight saplings for plantation in the Institute campus.

The survey team led by Dr. Usha Devi, Research Officer (Botany) comprised Mr. Himanshu Dwivedi, Research Assistant (Botany), Mr. Mohd. Tarique Ahmad, Field Attendant and Mr. Abdul Loqman, Driver.

Free health camps organized at Patna, Chennai

The Council's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Patna and Chennai organized free health camps on September 16 and October 11 respectively to provide free healthcare to the needy and underprivileged people and create awareness among the masses about the means of sustaining health and wellbeing and preventing diseases.

Dr. Mohd. Wasim Ahmed and Dr. Hashmat Imam of RRIUM, Patna attending to patients at Khanqah Munemia, Patna on September 16.

The RRIUM, Patna organized health camp at Khanqah Munemia, Mitan Ghat, Patna City which was inaugurated by Dr. Kazim Hashmi, Secretary, Jamia Munemia. The camp benefited over 220 patients suffering from various common and chronic diseases. To create awareness among the visitors, two lectures on 'General health awareness' and 'Prevention itself is a cure' were delivered by Dr. Mohd. Wasim Ahmed and Dr. Hashmat Imam respectively.

The RRIUM, Chennai organized health camp at Thangal, Erikarai Nagar, Virugambakkam and provided free healthcare to 173 patients comprising 74 men, 82 women, four boys and 13 girls.

During the two camps, health literature was also distributed among the visitors to propagate unique health benefits of Unani Medicine.

Technical report on chronic sinusitis published

The Central Council for Research in Unani Medicine recently published a technical report entitled '*Clinical Study of Polyherbal Unani Formulations in Waram Tajāwīf al-Anf Muzmin (Chronic Sinusitis)*'. The publication is based on two clinical studies conducted at the Council's Central Research Institute of Unani Medicine (CRIUM), Hyderabad on 3,675 patients of *Waram Tajāwīf al-Anf Muzmin* (Chronic Sinusitis) to evaluate the safety and efficacy of polyherbal Unani formulations.

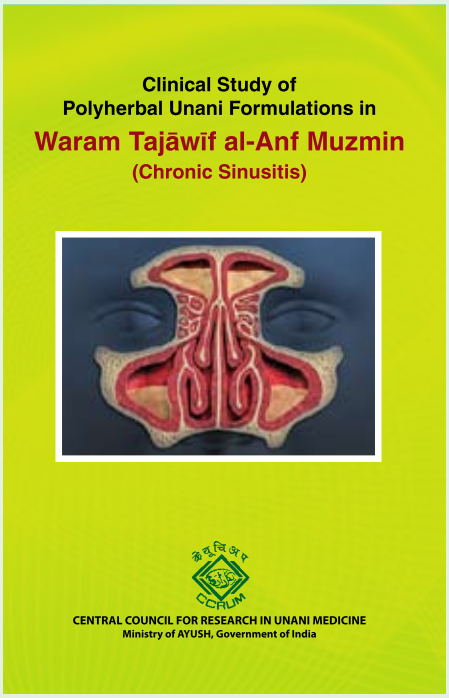

In the first study, 2,322 clinically confirmed patients of *Waram Tajāwīf al-Anf Muzmin* were treated with the combination of coded Unani formulations – UNIM-051 + UNIM-053. Of them, 1841 (79.3%) patients showed complete subsidence in all the clinical signs and symptoms.

In the second study, coded Unani formulations – UNIM-052 + UNIM-053 were given to 1,353 patients of *Waram Tajāwīf al-Anf Muzmin*. Out of them, 963 (71.2 %) patients showed complete relief in all signs and symptoms.

Pre- and post-treatment pathological and bio-chemical values were assessed in both the studies. The differential leucocyte count (DLC) showed significant reduction in eosinophil count of the patients at the end of the treatment. No statistically significant change was observed in the values of bio-chemical parameters in the studies, which suggested that the study drug combinations had no adverse effect on hepato-renal functions.

Therapeutic response and safety of both the studies drug combinations prove that they are safe and effective and confirm the claims of ancient Unani physicians mentioned in classical Unani texts regarding the treatment of the disease with the study drugs.

Registration No. 34691/80

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter *is published six times a year. Since January 2014 it is published bilingually in Hindi and English instead of being published in English only. It contains news chiefly about the work of Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is free of charge to individuals as well as organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the* CCRUM Newsletter *may be reproduced provided credit is given to the* CCRUM Newsletter *and provided such reproduction is not used for commercial purposes.*

Director General & Editor-in-Chief:
Prof. Rais-ur-Rahman

Executive Editor:
Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board:
Khalid M. Siddiqui
Zakiuddin
Salim Siddiqui
Qamar Uddin

Editorial Office:
CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE
61-65, Institutional Area, Opp. 'D' Block,
Janakpuri, New Delhi - 110 058 (India)

Telephone : +91-11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
Fax : +91-11/28522965
E-mail: unanimedicine@gmail.com
Website: www.ccrum.net

Printed at: Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020